अध्याय 8

बिलदद का पहला भाषण

बिलदद तीनों मित्रों में से बोलने वाला दूसरा व्यक्ति था। उसे ''परम्परावादी'' बताया गया है क्योंकि उसने पिछली पीढ़ियों के ज्ञान की बात की।[1] जॉन ई. हार्टले ने उसे '''पुराने समय' के धर्म का चैम्पियन'' बताया।[2] बिलदद केवल धर्मी और दुष्ट केवल दो प्रकार के लोगों की कल्पना कर सकता था। उसका मानना था कि परमेश्वर धर्मियों को आशीष ही देता है और दण्ड दुष्टों को ही देता है। बिलदद का सोचना व्यक्ति के जीवनकाल तक ही था उसके आगे का नहीं।

''क्या परमेश्वर अन्याय करता है?'' (8:1-7)

[1]तब शूही बिलदद ने कहा, [2]''तू कब तक ऐसी ऐसी बातें करता रहेगा, और तेरे मुँह की बातें कब तक प्रचण्ड वायु सी रहेंगी? [3]क्या परमेश्वर अन्याय करता है? और क्या सर्वशक्तिमान धर्म को उलटा करता है? [4]यदि तेरे बच्चों ने उसके विरुद्ध पाप किया है, तो उसने उनको उनके अपराध का फल भुगताया है। [5]तौभी यदि तू आप परमेश्वर को यत्न से ढूँढ़ता, और सर्वशक्तिमान से गिड़गिड़ाकर विनती करता, [6]और यदि तू निर्मल और धर्मी रहता, तो निश्चय वह तेरे लिये जागता; और तेरी धार्मिकता का निवास फिर ज्यों का त्यों कर देता। [7]चाहे तेरा भाग पहले छोटा ही रहा हो, परन्तु अन्त में तेरी बहुत बढ़ती होती।''

आयतें 1, 2. बिलदद ने कहा कि अय्यूब की **बातें प्रचण्ड वायु** के जैसी थीं। बाद में एलीपज ने वही आरोप लगाया (15:2)। तात्पर्य यह कि अय्यूब की बातें ''शोर से भरी पर खोखली'' थी।[3]

आयत 3. ''क्या परमेश्वर अन्याय करता है? और क्या सर्वशक्तिमान धर्म को उलटा करता है?'' ''न्याय'' (*mishpat, मिशपाट*) परमेश्वर के सर्वशक्तिमान होने, अधिकार के उसके कानूनी आधार की बात करता है। ''धर्म'' (*tsedeq, सेदेक़*) का अनुवाद ''धार्मिकता'' भी हो सकता है। यह ''नैतिक मानक से मेल खाने'' का संकेत देता है।[4] बिलदद के प्रश्न सचमुच में परोक्ष रूप में आरोप थे कि अय्यूब ने पाप किया था और यह कि उसके द्वारा दी जाने वाली सफ़ाई परमेश्वर पर न्याय को बिगाड़ने का आरोप लगाने के जैसी थी।[5]

आयत 4. पाप और उसकी सजा के कार्य-कारण में अपने पक्के विश्वास के कारण, बिलदद ने बिना सोचे विचारे अय्यूब के बच्चों पर परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध **पाप** (*pesha', पेशा*) या विद्रोह करने का आरोप लगा दिया।

आयतें 5-7. बिलदद ने यह मान लिया कि अय्यूब **निर्मल और धर्मी** नहीं था। उसने उससे **सर्वशक्तिमान से गिड़गिड़ाकर विनती** करने को कहा। यह अभिव्यक्ति क्षमा पाने के लिए पाप का अंगीकार करने क्षमा पाने की प्रार्थना जैसी है। फिर परमेश्वर का उत्तर अय्यूब को उसके बाद के वर्षों में **ज्यों का त्यों कर**के **उसकी बहुत बढ़ती** होना था। अय्यूब के मित्रों ने परमेश्वर

की आशिषों को केवल इस जीवन में भौतिक समृद्धि के रूप में ही देखा। यही गलती आज भी करना आसान है। निश्चय ही हमें आशिषों के लिए धन्यवाद करना आवश्यक है परन्तु हमें तब भी धन्यवाद करना आवश्यक है जब हमें नुक्सान होता है।

बिलदद के ज्ञान का स्त्रोत (8:8-10)

[8]''पिछली पीढ़ी के लोगों से तो पूछ, और जो कुछ उनके पुरखाओं ने जाँच पड़ताल की है उस पर ध्यान दे; [9]क्योंकि हम तो कल ही के हैं, और कुछ नहीं जानते; और पृथ्वी पर हमारे दिन छाया के समान बीतते जाते हैं। [10]क्या वे लोग तुझ से शिक्षा की बातें न कहेंगे? क्या वे अपने मन से बात न निकालेंगे?

आयतें 8-10. बिलदद के ज्ञान का स्त्रोत **पिछली पीढ़ी के लोगों** के शिक्षकों की समझ में पाया गया। जैसा कि पहले कहा गया था, उसने अतीत की बात की जिसके कारण उसे ''परम्परावादी'' का नाम दिया गया। मूल भाषा में ''पीढ़ी'' (*dor, डोर*) एकवचन में है परन्तु यह **उनके पुरखाओं** के सामूहिक ज्ञान की बात करता है। बिलदद का तर्क है कि सही निर्णय लेने के लिए हमारा संक्षिप्त जीवनकाल हमें आवश्यक ज्ञान नहीं देता। ''पुरखाओं की सम्मानित शिक्षाओं'' को सीखना आवश्यक है।[6] होमेर हेली ने लिखा है कि ''बिलदद किसी बात को इसलिए स्वीकार करके कि पुरखाओं ने इसे बिना उचित जांच के मान लिया था, 'परम्परा के जाल' में फंस गया।''[7]

यह सच है कि पृथ्वी पर का जीवन थोड़ी देर का है और सचमुच में हमें अतीत में सीखे गए ज्ञान से सीखना चाहिए। फिर भी इस प्रक्रिया में व्यक्ति अपनी स्वयं की खराई को नकार नहीं सकता। असल में बिलदद अय्यूब से यही करने को कह रहा था।

परमेश्वर का उसे बिसराने वालों को दण्ड (8:11-22)

[11]''क्या कछार की घास पानी बिना बढ़ सकती है? क्या सरकण्डा जल बिना बढ़ता है? [12]चाहे वह हरी हो, और काटी भी न गई हो, तौभी वह और सब भाँति की घास से पहले ही सूख जाती है। [13]परमेश्वर के सब बिसरानेवालों की गति ऐसी ही होती है और भक्तिहीन की आशा टूट जाती है। [14]उसकी आशा का मूल कट जाता है; और जिसका वह भरोसा करता है, वह मकड़ी का जाला ठहरता है। [15]चाहे वह अपने घर पर भरोसा रखे परन्तु वह न ठहरेगा; वह उसे दृढ़ता से थामेगा परन्तु वह स्थिर न रहेगा। [16]वह धूप पाकर हरा भरा हो जाता है, और उसकी डालियाँ बगीचे में चारों ओर फैलती हैं। [17]उसकी जड़ कंकरों के ढेर में लिपटी हुई रहती है, और वह पत्थर के स्थान को देख लेता है। [18]परन्तु जब वह अपने स्थान पर से नष्ट किया जाए, तब वह स्थान उससे यह कहकर मुँह मोड़ लेगा, 'मैं ने तुझे कभी देखा ही नहीं।' [19]देख, उसकी आनन्द भरी चाल यही है; फिर उसी मिट्टी में से दूसरे उगेंगे। [20]देख, परमेश्वर न तो खरे मनुष्य को निकम्मा जानकर छोड़ देता है, और न बुराई करनेवालों को संभालता है। [21]वह तो तुझे हँसमुख करेगा; और तुझ से जयजयकार

कराएगा। 22तेरे बैरी लज्जा का वस्त्र पहिनेंगे, और दुष्टों का डेरा कहीं रहने न पाएगा।''

बिलदद ने अपने तर्क के समर्थन के लिए कि परमेश्वर दुष्टों को दण्ड देता और वफ़ादारों को ईनाम देता है, प्रकृति से तीन उदाहरण दिए: कछार की घास (पेपिरस) का सूख जाना (8:11-13), मकड़ी के जाले का कमज़ोर होना (8:14, 15), और बगीचे के पौधे का नष्ट होना (8:16-19)।[8] इन उदाहरणों के बाद उसने नियम को लागू किया (8:20-22)।

आयतें 11, 12. ''क्या कछार की घास पानी बिना बढ़ सकती है? क्या सरकण्डा जल बिना बढ़ता है?'' ''कछार'' (पेपिरस) का पौधा नील नदी के आस पास की झीलों जैसे दलदली इलाकों में उगता है। मसीह से दो हज़ार साल पहले के युगेरी धर्मग्रंथों में भी इसका प्रमाण मिलता है कि यह गलील सागर के उत्तर की ओर हूले झील में उगता था।[9] कछार मिस्र में कागज बनाने और छोटी, तेज नावें बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाला कीमती पौधा था (9:26)। पौधे को पानी न मिले तो यह जल्दी से **सूख जाती** है।

आयत 13. बिलदद ने **परमेश्वर के बिसराने वालों और भक्तिहीन** लोगों के सम्बन्ध में आत्मिक प्रासंगिकता बनाने के लिए कछार के पौधे के सूख जाने से लिया। हार्टले ने कहा कि ''परमेश्वर को भूल जाना केवल याददाश्त चले जाने के कारण नहीं बल्कि परमेश्वर और उसके नियमों के प्रति किसी सम्मान के बिना रहने का जानबूझकर लिया जाने वाला निर्णय है।''[10] ''भक्तिहीन'' (*chanep, चानेप*) अय्यूब की पुस्तक में सांसारिक या धार्मिक व्यक्ति के विवरण के लिए इस्तेमाल होने वाला एक विशेष शब्द है। पुराने नियम में इस विशेषण के तेरह में से आठ बार अय्यूब की पुस्तक में इस्तेमाल हुआ है। यह उस आदमी की बात करता है जो परमेश्वर को भूल जाता है (8:13) और सच्चाई के विरोध में जीवन बिताता है (17:8)। ऐसा व्यक्ति कभी परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं आ सकता (13:16) और उसे कभी लोगों का भरोसा नहीं मिलना चाहिए (34:30)।[11]

आयतें 14, 15. अगला उदाहरण **मकड़ी के जाले** की कमज़ोरी का है। बिलदद ने कहा कि दुष्ट व्यक्ति की **आशा** और भरोसा मकड़ी के जाले की तरह कमज़ोर है। ऐसा व्यक्ति **अपने घर पर भरोसा** रखता है परन्तु **वह न ठहरेगा**। यह भाषा उन पिछली विपत्तियों की ओर ध्यान दिला सकती है जो अय्यूब के ऊपर पड़ी थीं: ''जंगल की ओर से बड़ी प्रचण्ड वायु चली, और घर के चारों कोनों पर ऐसा झोंका मारा कि वह जवानों पर पड़ा और वह गिर गए।'' जिससे अय्यूब का ''घर'' यानी उसका परिवार उससे छिन गया था (1:18, 19)। ऐसा लगता है कि बिलदद अय्यूब के ऊपर परमेश्वर में भरोसा रखने के बजाय अपनी ही समृद्धि पर भरोसा रखने का आरोप लगा रहा था।

आयतें 16-18. तीसरा उदाहरण **बगीचे** के कंकरों के ढेर में उगने वाले एक सख्त पौधे का है। उसको निकाल दिए जाने पर उसके अस्तित्व का कोई प्रमाण नहीं रहता है। शायद यह रूपक दुष्ट व्यक्ति (या धर्मी को जो दुष्ट बन जाता है) को दर्शाता है, जो थोड़ी देर तक फलता हुआ लगता है परन्तु वह बर्बाद हो जाता है और जल्द ही भुला दिया जाता है।

आयत 19. ''देख, उसकी आनन्द भरी चाल यही है; फिर उसी मिट्टी में से दूसरे उगेंगे।'' विद्वानों ने इसकी व्याख्या ताने या कटाक्ष के रूप में की है।[12] बिलदद यह कह रहा

था कि कुल मिलाकर इसका अर्थ यह है कि जैसे बड़े-बूढ़े कहा करते थे और जैसे प्रकृति के तरीकों में दिखाई देता है, वह यह है कि परमेश्वर बदला लेने के नियम में कभी पीछे नहीं हटता।

आयतें 20-22. ''देख, परमेश्वर न तो खरे मनुष्य को निकम्मा जानकर छोड़ देता है।'' परन्तु यह तकरार की बात है! अय्यूब ने अपनी खराई को बरकरार रखा (27:5; 31:6), फिर भी उन विपत्तियों और बीमारी के कारण जो उस के ऊपर पड़ी थी उसे लगता था कि परमेश्वर ने उसे ठुकरा दिया है। वह इसी मुद्दे पर चर्चा कर रहा था। **''और न बुराई करनेवालों को संभालता है।''** इब्रानी मूल धर्म शास्त्र में कहा गया है, ''न वह बुराई करने वालों के हाथ को मज़बूत करेगा।'' हम इन बातों को सच मान सकते हैं कि वे सामान्य नियम हैं। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि खराई से चलने वाले लोगों को कभी दु:ख नहीं आता या कई बार बुराई करने वाले ही फलते नहीं हैं। अच्छे लोग भी छोटी उम्र में मर जाते हैं! बुरे लोग लोगों की आंखों में धूल झोंकने में सफल हो जाते हैं! अंत में परमेश्वर सब कुछ ठीक कर देगा परन्तु इसी जीवन में हो यह आवश्यक नहीं।

बिलदद अय्यूब से मन फिराने को कह रहा था ताकि उसकी पहले वाली अवस्था बहाल हो जाए। इन आयतों पर होमेर हेली की अंतिम टिप्पणियां सराहनीय हैं:

> बिलदद द्वारा बताई गई सच्चाई को ध्यान में रखते हुए, उसके भाषण में क्या गलती मिल सकती है? पहले उसने अय्यूब के दु:ख सहने को पाप के लिए परमेश्वर के सच्चे न्याय के रूप में देखा। दूसरा उसे भौतिक आशिषों के अलावा धार्मिकता के लिए कोई इनाम भी दिखाई नहीं दिया। उसने बिना किसी असली प्रमाण के निर्णय कर दिया। वह बिना उनकी गहन समीक्षा किए परम्परागत विचारों से निष्कर्ष निकालने के लिए उन पर निर्भर रहने का शिकार हुआ, जो एक ऐसी गलती है कि सब पीढ़ियों में पाई जाती है।[13]

प्रासंगिकता

अकुशल शांति देने वाला और खोया हुआ अवसर (अध्याय 8)

अकुशल शांति देने वाला। अय्यूब के तीनों मित्र उसे शांति देने आए थे परन्तु जब उसका मित्र एलीपज बोलने लगा तो अय्यूब को उसकी बातों में कोई शांति नहीं मिली। अय्यूब के खराई से दिए गए उत्तर के बाद एक और मित्र बोलने के लिए उठा। उसका नाम बिलदद था। वह इस बात से परेशान लगा कि अय्यूब अपने आपको बेकसूर होने का दावा कर रहा था। अपने परेशान मित्र के प्रति अपनी टिप्पणियों में बिलदद रूखा और अकुशल था।

अकुशल और दु:खी करने वाली आरम्भिक टिप्पणियां। जब बिलदद ने अपनी चुप्पी तोड़कर अंत में अय्यूब के साथ बात की तो वह अपने मित्र के साथ सहानुभूति और करुणा नहीं दिखा रहा था। बिलदद को नहीं लगता था कि अय्यूब या उसके बच्चे निर्दोष हैं; फिर भी इस बात से उसे किसी को दु:खी करने का अधिकार नहीं मिल जाता। अय्यूब ने अभी-अभी एलीपज को उत्तर दिया था। इसके बाद अय्यूब ने अपने मन की बात कही और परमेश्वर तथा अपने मित्रों के साथ अपनी कुंठाएं और भावनाएं साझा कीं। अय्यूब की भावनाओं की कदर करने और एक अच्छा शांति देने वाला होने के बजाय बिलदद अपमानजनक, आरोप लगाने

वाला, निर्दयी और दु:ख पहुंचाने वाला साबित हुआ। उसने उन टिप्पणियों को जो अभी अभी अय्यूब ने की थीं, नकारात हुए आरम्भ किया। बिलदद ने अकुशलता से अय्यूब को यह बताया कि उसकी बातें प्रचंड वायु के जैसी थीं। किसी दु:खी मित्र के लिए ऐसी बात कहना बहुत भयानक है। फिर बिलदद की अकुशल बातों ने और गहरा घाव किया। उसने बिना सोचे अय्यूब के बच्चों पर पाप करने का आरोप लगा दिया और इसलिए सुझाव दिया कि उन्हें अपने किए की कीमत चुकानी पड़ी (8:4)। यदि हम अय्यूब की जगह होते तो क्या हम अपने किसी मित्र से यह सुनने की कल्पना कर सकते हैं कि हमारे बच्चों की मृत्यु इस कारण हुई कि परमेश्वर ने उन्हें उनके अपराधों का दण्ड दिया? अय्यूब जैसे धीरजवान व्यक्ति के लिए भी यह बहुत पीड़ादायक रहा होगा!

अकुशल और दु:ख देने वाला ''यदि।'' आयतें 5 और 6 में बिलदद ने अय्यूब को वही सलाह दी जो एलीपज ने दी थी। बिलदद ने यह सुझाव दिया कि अय्यूब मान ले कि ये विपत्तियां उस पर किस कारण से आईं थीं। बिलदद ने कहा, ''तौभी *यदि* तू आप परमेश्वर को यत्न से ढूँढ़ता, और सर्वशक्तिमान से गिड़गिड़ाकर विनती करता, और *यदि* तू निर्मल और धर्मी रहता, तो निश्चय वह तेरे लिये जागता; और तेरी धार्मिकता का निवास फिर ज्यों का त्यों कर देता।'' बिलदद की कुछ सलाह तो बाइबल के अनुसार ही है। हम में से हर किसी को ''परमेश्वर को ढूंढ़ना'' चाहिए। और हमें से हर किसी को सर्वशक्तिमान से ''गिड़गिड़ाकर विनती करनी चाहिए। जब हम पाप करते हैं तो याकूब 5:16 बताता है कि हम अपने पापों को मानकर प्रार्थना करें, ताकि हम चंगे हो जाएं। परन्तु बिलदद ने इन शानदार आत्मिक नियमों को लेकर इनसे कुछ गलत निष्कर्ष निकाल लिए जिनसे अय्यूब को दु:ख हुआ। उसके कहने का तात्पर्य यह था कि अय्यूब परमेश्वर को ढूंढ नहीं रहा था, उसके सामने गिड़गिड़ा नहीं रहा था या शुद्ध और धर्मी जीवन नहीं जी रहा था।

अकुशल और दु:ख देने वाला उपदेश। आयत 8 के आरम्भ में बिलदद ने प्रचार करना शुरू कर दिया और उसने अय्यूब को इतिहास में से अच्छा सबक देना चाहा। इतिहास का पूर्व शिक्षक होने के नाते, मुझे अतीत में झांकना और अतीत का अध्ययन करना अच्छा लगता है। यदि हम अतीत से सबक नहीं लेते तो हम अपने अतीत की गलतियों को फिर से दोहराएंगे। ''पृथ्वी पर हमारे दिन छाया के समान बीतते जाते हैं'' (8:9), इस कारण हमें ''पिछली पीढ़ी के लोगों'' की बातों का अध्ययन करके उनसे सीख लेना चाहिए (8:8)। वह प्राचीन सबक कौन सा है जो बिलदद को लगता था कि अय्यूब को अतीत पर ध्यान देने से सीखना चाहिए? इसका उत्तर आयत 20 में मिलता है। बिलदद ने कहा, ''परमेश्वर न तो खरे मनुष्य को निकम्मा जानकर छोड़ देता है।'' बिलदद यह कह रहा था कि उनके पूर्वजों ने वह सबक सीख लिया था जिसे अय्यूब अब कठोर ढंग से सीख रहा था। वह सबक यह था कि परमेश्वर बुराई करने वालों को दण्ड देता है। इसलिए बिलदद का मानना था कि अय्यूब ने बुराई की होगी जिस कारण परमेश्वर उसे उसके पापों का दण्ड दे रहा था। आयत 11 में बिलदद ने अपने उपदेश को प्रकृति की ओर मोड़कर अय्यूब को बताया कि वह उस पौधे के जैसा है जो बिना पानी के नहीं बढ़ता। तात्पर्य यह है कि अय्यूब ने सूखकर (8:12) मर जाना था, क्योंकि उसने अपने परमेश्वर को भुला दिया था और परमेश्वर अय्यूब को खुराक नहीं दे रहा था (8:13)। बिलदद के कहने का अर्थ यह

था कि उसका मित्र अय्यूब ''भक्तिहीन'' था (8:13)।

बिलदद ने ऐसी खराब मान्यता क्यों बनाई ? इसलिए क्योंकि बिलदद का मानना था कि बुरी बातें खरे लोगों के साथ नहीं होतीं। यह सुनाए जाने के लिए एक कष्टदायक उपदेश है। अय्यूब और बाद में यूसुफ, पौलुस और यीशु सब खराई से चलने वाले लोग थे; और इनमें से हर किसी ने उन परेशानियों को सहा जिनके वे हक्कदार नहीं थे।

खोया हुआ अवसर। बिलदद ने आवश्यकता के समय अपने मित्र को तसल्ली देने का सुनहरी अवसर खो दिया। अय्यूब को उपदेश की आवश्यकता नहीं थी। न ही उसे उसके विरुद्ध लगाए गए अकुशल और दु:खी करने वाले आरोपों की आवश्यकता थी। अय्यूब को अपनी निराशा में उसे तसल्ली देने के लिए अतीत से या प्रकृति के संसार से एक के बाद एक उदाहरणों की आवश्यकता नहीं थी। अय्यूब को केवल किसी ऐसे मित्र की आवश्यकता थी जो उसे तसल्ली और दिलासा दे सके (देखें यूहन्ना 11:19)। उसे किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो उसके दु:ख के साथ दु:खी हो सके (देखें 1 कुरिन्थियों 12:26)। उसे किसी ऐसे मित्र की आवश्यकता थी जो ''रोने वालों के साथ रोए'' (रोमियों 12:15)। अपनी बात कहने की कोशिश करते हुए बिलदद ने अवसर खो दिया और उसने दु:खी मित्र को तसल्ली देने का सुनहरा अवसर गंवा दिया।

एफ. मिलस

टिप्पणियां

[1]*परिचय* में बिलदद का चरित्र चित्रण देखें, पृष्ठ 12-13. [2]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 154. [3]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 83. [4]*थियोलॉजिकल वर्डबुक ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* संपा. आर. लेयर्ड हैरिस, ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर, ऐंड ब्रूस के. वाल्टके (शिकागो: मूडी प्रैस, 1980), 2:752 में हेरल्ड जी. स्टाइगर्स, *''ṣādēq, शदेक़।''* [5]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 85. [6]हार्टले, 159. [7]हेली, 87. [8]हार्टले से लिया गया, 157-58. [9]वहीं, 160. [10]वहीं, 161.

[11]''भक्तिहीन'' के अन्य हवालों के दिए देखें 15:34; 20:5; 27:8; 36:13. [12]हेली, 89; रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 121. [13]हेली, 90.